भावनामृत को उद्भावित करना है। परिस्थितियों में भेद के कारण ही इस भावना का समय-समय पर प्रकाश-अप्रकाश होता रहता है।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।८।।

परित्राणाय=उद्धार करने के लिए; **साधूनाम्**=भक्तजनों का; **विनाशाय**=विनाश करने के लिए; **च**=तथा; **दुष्कृताम्**=दुष्टों का; **धर्म**=धर्म की; **संस्थापनार्थाय**=पुर्नस्थापना के लिए; **संभवामि**=मैं प्रकट होता हूँ; **युगे**=युग; **युगे**=युग में।

अनुवाद

भक्तजनों का उद्धार, दुष्टों का नाश और धर्म का फिर से स्थापन करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।।८।।

तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार साधु वही है, जो कृष्णभावनाभावित हो। अधर्मी प्रतीत होने वाला भी यदि पूर्णतया कृष्णभावनाभावित हो, तो वह साधु ही मान्य है। **दुष्कृताम्** शब्द से कृष्णभावना की अपेक्षा करने वाला इंगित है। लौकिक विद्या से युक्त होते हुए भी ऐसे 'दुष्कृताम्' अथवा दुष्टों को मूढ और नराधम ही कहा जाता है। इसके विपरीत, विद्या-संस्कृति से शून्य होने पर भी जो पूर्णतया कृष्णभावना के परायण हैं सदा साधु मान्य हैं। अनीश्वरवादियों के विनाशार्थ श्रीभगवान् के लिए उस प्रकार स्वयं प्रकट होना आवश्यक नहीं, जिस प्रकार रावण, कंस आदि के लिए उनका अवतार हुआ था। उनके अनेक सेवक दैत्य-दलन में पूर्ण समर्थ हैं। वास्तव में असुरों से उत्पीड़ित शुद्धभक्तों को प्रसन्न करने के लिए ही श्रीभगवान् विशिष्ट अवतार धारण करते हैं। आसुरभावापन्न दैत्य भक्त को अवश्य कष्ट देते हैं, चाहे वह स्वजन ही क्यों न हो। यद्यपि प्रह्लाद हिरण्यकशिपु के पुत्र थे, तथापि उसने उन्हें त्रासित किया; श्रीकृष्ण-जननी देवकी कंस की बहन थीं, पर फिर भी वसुदेव-देवकी को केवल इसी कारण से त्रासित किया गया कि उनके यहाँ श्रीकृष्ण का आविर्भाव होने वाला था। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण कंसवध की अपेक्षा प्रधान रूप से देवकी-परित्राण के लिए प्रकट हुए; परन्तु दोनों उद्देश्य एक साथ पूर्ण हो गये। इसी से यहाँ कहा है कि भक्त-परित्राण एवं असुर-मर्दन के लिए श्रीभगवान् विविध अवतार धारण करते हैं।

विद्वच्चूड़ामणि श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीचरण द्वारा विरचित श्रीचैतन्य-चरितामृत के निम्नलिखित छन्दों में अवतार सिद्धान्तों का सारांश प्रतिपादन है—

सृष्टि हेतु येइ मूर्ति प्रपञ्चे अवतरे। सेइ ईश्वर-मूर्ति अवतार नाम धरे।।
मायातीत परव्योमे सबार अवस्थान। विश्वे अवतारी धरे अवतार नाम।।

''सृष्टि में प्रकट होने के लिए अवतार-विग्रह भगवद्धाम से अवतीर्ण होते हैं। इस प्रकार अवतीर्ण होने वाली भगवत्-मूर्ति को 'अवतार' कहा जाता है। ये सब